राजस्थान सरकार स्वायत्त शासन विभाग राज. जयपुर के द्वारा जारी उद्घोषणा पत्रांक–एफ. (3)एलएसजी/74/24178–90 दिनांक 16.04.1975 के अनुसार ग्राम पंचायत सांचौर जिला जालौर को आबादी वर्ष 1971 की जनसंख्या के आधार पर 8048 हो चुकी है। तथा ग्राम पंचायत सांचौर एक महत्वपूर्ण व्यापारिक मंडी है। कस्बा का विकास करने हेतु समस्त सुविधा होने के कारण ग्राम पंचायत सांचौर को विलोपित कर दिनांक 23 सितम्बर 1975 को नगरपालिका सांचौर का गठन किया गया। तत्कालीन सरपंच श्री धर्माराम को अध्यक्ष का कार्यभार दिया गया। तत् पश्चात् राज्य सरकार द्वारा नगरपालिका गठन नगरपालिका मंडल को कार्य सुचारु रुप से चलाने हेतु राजस्थान नगरपालिका अधिनियम 1959 की धारा 10 के तहत मनोनित बोर्ड का गठन किया गया। जिसमें 11 सदस्यों को मनोनित कर मंडल का गठन कर मंडल के अध्यक्ष का कार्यभार तहसीलदार सांचौर को सुपर्द किया गया। जो निम्न अनुसार है।

क्र.स.	पदनाम	मंडल सदस्य
1	तहसीलदार सांचौर	अध्यक्ष
2	विकास अधिकारी पंचायत समिति सांचौर	सदस्य
3	प्रधानाध्यापक रा.उ.मा.वि.सांचौर	सदस्य
4	सहायक अभियन्ता सा.नि.वि. सांचौर	सदस्य
5	कनिष्ठ अभियन्ता आर.एस.ई.बी. सांचौर	सदस्य
6	सहायक अभियन्ता जलदाय विभाग सांचौर	सदस्य
7	श्री धर्माराम प्रजापत पूर्व संरपंच ग्रा.पंचायत सांचौर	सदस्य
8	श्री हरकचंद एडवोकेट सांचौर	सदस्य
9	श्री विरदाराम मेघवाल (अनुसूचित जाति)	सदस्य
10	श्री केसुखां पूर्व जागीरदार सांचौर	सदस्य
11	श्री कनकराज मेहता एडवोकेट सांचौर	सदस्य

नगरपालिका मंडल सांचौर का निर्वाचित मंडल का सर्व प्रथम आम चुनाव 1981 में 10 वार्डो का गठन कर चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें 5 माननीय सदस्य कांग्रेस एवं 5 सदस्य निर्दलीय समर्थित निर्वाचित हुए। महिला सहवृत सदस्य का चयन हुआ जिसमें श्रीमती अमृता कंवर एवं श्रीमती ककु देवी चौधरी को निर्वाचित घोषित होने के पश्चात् अध्यक्ष पद के चुनाव में निर्विरोध श्री केसु खां झेरडिया (पूर्व जागीरदार सांचौर) को निर्वाचित घोषित किया गया। उपाध्यक्ष पद पर श्री बाबुलाल बुरड़ निर्वाचित हुए।

अगस्त 1990 में द्वितीय निर्वाचित मंडल का गठन हुआ जिसमें 13 वार्डों के सदस्यों का निर्वाचन हुआ। भारतीय जनता पार्टी का बहुमत होने से श्री अमरलाल मेहता अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष पद पर श्री मानसिंह राव निर्वाचित हुए। इस मंडल का कार्यकाल 20 अगस्त 1990 से 22 अगस्त 1995 तक रहा।

सांचौर नगरपालिका का अगस्त 1995 में तृतीय बोर्ड का गठन हुआ जिसमें 00 वार्डो का गठन कर निर्वाचन किया गया। जिसमें कांग्रेस दल की श्रीमती ओखी देवी अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुई। उपाध्यक्ष पद पर श्री मानसिंह राव निर्वाचित हुए। श्रीमती ओखी देवी का 13 माह का कार्याकाल के पश्चात् तीन चौथाई बहुमत के आधार पर अविश्वास होने के कारण पदच्युत की गयी। पदच्युत होने के कारण अक्टूम्बर 1996 से 19 फरवारी 1997 तक कार्यवाहक अध्यक्ष श्री मानसिंह राव पद पर आशित रहें। दिनांक 19.02.1997 को पुनः अध्यक्ष पद का चुनाव होने के कारण श्रीमती बादली देवी निर्विरोध निर्वाचित घोषित की गयी। जिसका कार्यकाल 30 अगस्त 2000 तक रहा।

पालिका का चतुर्थ बोर्ड का गठन अगस्त 2002 में 20 पार्षद्ों का निर्वाचन होने पर निर्दलीय का बहुमत होने के कारण श्री रमेश मेहता निर्विरोध अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। एवं उपाध्यक्ष पद पर श्री बाबुलाल भाट को निर्वाचित घोषित किया गया। जो दिनांक 06.10.2001 को तीन चौथाई बहुमत के आधार पर अविश्वास होने के कारण पदच्युत किया गया। पदच्युत होने के कारण 6 अक्टूम्बर 2001 से 5 जनवरी 2003 तक श्री बाबुलाल भाट उपाध्यक्ष को अध्यक्ष पद का कार्यभार दिया गया। दिनांक 06.01.2003 को पुनः

मंडल अध्यक्ष के चुनाव मे श्री सांवलचंद संघवी निर्विरोध अघ्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। जिनका कार्यकाल 27 अगस्त 2005 तक रहा।

पालिका का पंचम बोर्ड का गठन अगस्त 2005 में 25 गठित वार्डो में चुनाव सम्पन्न होने पर भारतीय जनता पार्टी के श्री मांगीलाल जीनगर निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष पद पर श्रीमती सुजाता देवी संघवी निर्वाचित घोषित हुए जिनका कार्यकाल 20 अगस्त 2010 तक रहा।

पालिका के षष्ट्म बोर्ड का गठन अगस्त 2010 में 25 वार्डो के अतिरिक्त राज्य सरकार द्वारा संशोधित अध्यादेश अनुसार अघ्यक्ष पद का चुनाव प्रत्यक्ष मत प्रणाली के द्वारा होने पर कांग्रेस पाटी के श्री रमेश मेहता अघ्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। 25 वार्ड पार्षद्ों के निर्वाचित सदस्यों द्वारा श्री गंगाराम माली को उपाध्यक्ष पर निर्विरोध घोषित किया गया। उक्त मंडल का कार्यकाल 20 अगस्त 2015 तक रहा।

पालिका का सप्तम् बोर्ड का गठन 20 अगस्त 2015 को 25 वार्डो के निर्वाचित सदस्यों द्वारा होने पर भारतीय जनता पार्टी का बहुमत होने पर सुश्री इन्द्रा खोरवाल का निर्विरोध निर्वाचित घोषित की गयी। अध्यक्ष का चुनाव निर्वाचित पार्षद्ों द्वारा किया गया। एवं उपाध्यक्ष पद पर श्री दिलीप कुमार राठी को निर्वाचित घोषित हुए। जो वर्तमान में कार्यरत है।

'' सत्यपुर सुषमा सुखद, महिमा से भरपुर।
तपोभूमि तीर्थस्थली, नर नारी मुख नूर ।।
नर नारी मुख नूर, जाना मंदिर स्थित।
दूर–दूर से आते दर्शन करने सम्मित।।
गौ–धन यहां प्रसिद्व, प्रभू की कृपा कपूर।
मुदित मृदु मुस्कान, मंगलमय सत्यपुर ।। ''

जालौर जिले का प्रसिद्व नगर सत्यपुर (सांचौर) अपने अतीत में विलक्षण पैराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व को संजाये हुए है। यह शूरवीर एवं सरस्वती के उपासक सारस्वत कवियों की कर्मस्थली रही है। यह नगर जालौर मुख्यालय से दक्षिण पश्चिम दिशा में 155 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां से एक तरफ गुजरात राज्य की सीमा लगती है। तो दूसरी तरफ पाकिस्तान की सीमा भी दूर नही है।

एक सहस्त्र वर्ष प्राचीन शिलालेखों, अवशेषों एवं समद्व जैन साहित्य भण्डार से यह प्रमाणित होता है कि प्राचीनकाल से यह बहुत ही भव्य एवं विशाल नगर था। मारवाड़ के प्रसिद्व ऐतिहासिक ग्रंथ ''मुणोत नैणसी री ख्यात '' में इसकी प्राचीनता का सुन्दर वर्णन मिलता है। उसके अनुसार यह सरस्वती नदी के किनारे बसा हुआ अति प्राचीन नगर था। इसके चारों तरफ विशाल दीवार बनी हुई थी। यह नगर रेती के टीले पर बसा हुआ था। एवं नगर के मध्य ईटों का मजबूत कोट था। जिसके मध्य राजओं का आवास था। वर्तमान में यहां सरस्वती नदी नही बहती परन्तु अनेक भू अनुसंधानकर्ताओं ने इस पावन नदी को अंत सलीला बताकर यह प्रमाणित किया है कि इसका प्रवाह यही था।

यह नगर लगभग 18 किलोमीटर विस्तार में फैला हुआ था। उत्तर में सती दाक्षामणी के प्रसिद्व देवालय से दक्षिण में गोलासन हनुमानजी के मंदिर तक विशाल बाजार था। यहां अनेकों श्रेष्ठियों एवं विप्रवरों का निवास था। उस समय यहां के भव्य मंदिर नगर की शोभा में चार चांद लगाते थें। नगर के चारों दिशाओं में बालार्क तरुणार्क, वृद्वार्क एवं सिद्वार्थ के प्रसिद्व सूर्य मंदिर थें। इसके अलावा सतीदाक्षामणी,महावीर स्वामी, भगवान महोदव आदि के विशाल देवालय थें। आज भी इन मंदिरों के पत्थर नगर में स्थित जामा मस्जिद में अपने अतिथि उत्कृष्ता की गौरव गाथा गा रहे है। उस समय यहां की धातु कला व मूर्ति, जगविख्याति

खुदाई के समय आज भी यन्त्र–तंत्र इन पत्थरों के अवशेष देखने को मिलते है। यहां के उत्कृष्ट कलाकृति की ग्यारह मूर्तियां जोधपुर संग्रहालय में देखी जा सकती है।

इस नगर के नामों की अवधारण भी एक विस्तृत परम्परा दिये हुए है। स्कंन्द पुराण के अबुर्दोत्पति प्रथम अध्याय के अनुसार एक बार सांकल्प ऋषि की कन्या साची ने सांप से मुक्ति प्राप्त करने हेतु हर (महादेव) की कठोर तपस्या की। हर ने उसके आराधना पर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। तथा कहां की यह नगर दोनों के संयुक्त नाम से (साचीा+हर) साचीहर कहलायेगा। तदन्तर इसका नाम साचीहर हुआ। प्रसिद्व जैन कवि धनपाल जिन्होनें इस पावन धरा पर साहित्य सर्जन किया, अपने प्रसिद्व ग्रंथ महावीरोत्साह में इस नगर का नाम सचूरी कहां है। यह रचना विक्रम सवत् 1081 में लिखी गई। तदुपरान्त इस नाम के अन्त का प्रत्यय 'ई' हटकर सचूर हो गया। सत्यपुर–काल के रचयिता जैन मुनि जिन प्रभसूरि ने विक्रम संवत् 1370 में इस नगर का नाम सचूर बतलाया है।

कालक्रमानुसार नाम में परिवर्तन होते रहे है। जैन महाकवि समय सुन्दर जिन्होनें 'महावीर स्तवन' नामक काव्य ग्रंथ लिखा, उसमें उन्होंने इस नगर को 'सांचोरु' नाम से उल्लेखित किया है। यही नाम कालक्रमानुसार परिवर्तित होकर सांचौर हो गया।

फसले एवं व्यवसाय :–तहसील में कई गांवों में पानी मीठा है जहां खरीफ के अलावा रबी के मौसम मे जीरा, ईसबगोल, रायड़ा, सरसों एवं गेहूं इत्यादि का उत्पादन किया जाता है। तहसील के लोगों का मुख्य धंध खेती एवं पशुपालन है।

रोजगार :– शिक्षा का स्तर सुधरने से यहां के हजारों व्यक्ति सरकारी नौकरियों में विभिन्न पदों पर कार्यरत है। कई नव युवक रोजगार की तलास में मुम्बई अहमदाबाद आदि शहरों कें गये है जहां पर मेहनत कर अच्छी कमाई कर रहे है। इस प्रकार वर्तमान में न केवल सांचौर नगर वरन सम्पूर्ण सांचौर तहसील विकास की ओर अग्रसर है।

सम्प्रदाय :–तहसील में सबसे ज्यादा चौघरी(कलबी) एवं विश्नोई जाति के लोग निवास करते है। इसके अलावा ब्राहम्ण, राजपूत, जाट, कुम्हार, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जाति आदि के विभिन्न समुदाय के लोग रहते है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार तहसील में कुल 207000 मतदाता है।

दर्शनीय स्थल :–तहसील में सती दाक्षायणी, होतीगांव में फुलमुक्तेश्वर महादेव, गोलासन मे बाला हनुमान मंदिर एवं पीरों की जाल एवं खासरवी में स्थित माता जी का स्थान में प्रसिद्व तीर्थ स्थान है जहां ` अनेक उत्सवों एवं मेलों का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों से राजस्थान राज्य की महत्वपूर्ण तहसील है।

समस्या :–क्षेत्र के कई गांवो की स्थिति बड़ी सोचनीय है। न तो वहां पर आवागमन के साधन है तथा न ही कोई विकास। दूर–दराज में आये यह गांव अनेक संघर्षो का सामना कर रहे है। न बिजली, न पानी, न शिक्षा एवं गरीबी के यहां के लोगों की स्थिति दयनीय बना दी है।